वचनामृत - 401

बंबई, भादों सुदी १, मंगल, १९४८

शुभवृत्ति मणिलाल, बोटाद।

आपका वैराग्यादि के विचार वाला एक सविस्तर पत्र तीनेक दिन पहले मिला है।

जीव में वैराग्य उत्पन्न होना इसे एक महान गुण मानते हैं; और उसके साथ शम, दम, विवेक आदि साधन अनुक्रम से उत्पन्न होने रूप योग प्राप्त हो तो जीव को कल्याण की प्राप्ति सुलभ होती है, ऐसा समझते हैं। (ऊपर की पंक्ति में 'योग' शब्द लिखा है, उसका अर्थ प्रसंग अथवा सत्संग समझना चाहिये।)

अनंत काल से जीव का संसार में परिभ्रमण हो रहा है, और इस परिभ्रमण में इसने अनंत जप, तप, वैराग्य आदि साधन किये प्रतीत होते हैं, तथापि जिससे यथार्थ कल्याण सिद्ध होता है, ऐसा एक भी साधन हो सका हो ऐसा प्रतीत नहीं होता। ऐसे तप, जप या वैराग्य अथवा दूसरे साधन मात्र संसार रूप हुए हैं; वैसा किस कारण से हुआ? यह बात अवश्य वारंवार विचारणीय है। (यहाँ किसी भी प्रकार से जप, तप, वैराग्य आदि साधन निष्फल हैं, ऐसा कहने का हेतु नहीं है, परंतु निष्फल हुए हैं, उसका हेतु क्या होगा? उसका विचार करने के लिये लिखा गया है। कल्याण की प्राप्ति जिसे होती है, ऐसे जीव में वैराग्य आदि साधन तो अवश्य होते हैं।)

श्री सुभाग्यभाई के कहने से, यह पत्र जिसकी ओर से लिखा गया है, उसके लिये आपने जो कुछ श्रवण किया है, वह उनका कहना तथातथ्य है या नहीं? यह भी निर्धार करने जैसी बात है।

हमारे सत्संग में निरंतर रहने संबंधी आपकी जो इच्छा है, उसके विषय में अभी कुछ लिख सकना अशक्य है।

आपके जानने में आया होगा कि यहाँ हमारा जो रहना होता है वह उपाधिपूर्वक होता है, और वह उपाधि इस प्रकार से है कि वैसे प्रसंग में श्री तीर्थंकर जैसे पुरुष के विषय में निर्धार

करना हो तो भी विकट हो जाए, क्योंकि अनादि काल से जीव को मात्र बाह्य प्रवृत्ति अथवा बाह्य निवृत्ति की पहचान है, और उसके आधार से ही वह सत्पुरुष, असत् पुरुष की कल्पना करता आया है। कदाचित् किसी सत्संग के योग से 'सत्पुरुष ये हैं,' ऐसा जीव के जानने में आता है, तो भी फिर उनका बाह्य प्रवृत्ति रूप योग देखकर जैसा चाहिये वैसा निश्चय नहीं रहता; अथवा तो निरंतर बढ़ता हुआ भक्ति भाव नहीं रहता; और कभी तो संदेह को प्राप्त हो कर जीव वैसे सत्पुरुष के योग का त्याग कर जिसकी बाह्य निवृत्ति दिखायी देती है, ऐसे असत् पुरुष का दृढ़ आग्रह से सेवन करता है। इसलिये जिस काल में सत्पुरुष को निवृत्ति प्रसंग रहता हो वैसे प्रसंग में उनके समीप रहना इसे जीव के लिये विशेष हितकर समझते हैं।

इस बात का इस समय इससे विशेष लिखा जाना अशक्य है। यदि किसी प्रसंग से हमारा समागम हो तो उस समय आप इस विषय में पूछियेगा और कुछ विशेष कहने योग्य प्रसंग होगा तो कह सकना संभव है।

दीक्षा लेने की वारंवार इच्छा होती हो तो भी अभी उस वृत्ति को शांत करना, और कल्याण क्या तथा वह कैसे हो इसकी वारंवार विचारणा और गवेषणा करना। इस प्रकार में अनंतकाल से भूल होते आई है, इसलिये अत्यंत विचार से कदम उठाना योग्य है।

अभी यही विनती।

रायचंद के निष्काम यथायोग्य।